27.04.2020

Page No.
Date

Differences between individual learners -

i) आत्म-धारणा (Self-Concept) -

भूमिका - अकात्मक प्रदर्शन के रूप में तत्वों में शामिल है, ये अपने आप के बारे में विश्वास का एक संग्रह है। जिसमें लिंग भूमिकाओं और कामुकता, और जातीय पहचान किया जाता है।
आत्म-धारणा आत्मसम्मान से अलग है: स्वयं अवधारणा आत्म का एक संज्ञानात्मक या वर्णनात्मक घटक है जबकि आत्मसम्मान मूल्यांकन और स्वच्छंद है।

आत्म-धारणा एक के नजरिए और स्वभाव को, जो आत्म-ज्ञान परिभाषित किया गया है करने के लिए इस हद तक संदर्भित करता है, जो आत्म जागरूकता से अलग पहचान सुसंगत और वर्तमान में लागू है। आत्म-धारणा आत्मसम्मान से अलग है, स्वयं अवधारणा आत्म का एक संज्ञानात्मक या वर्णात्मक घटक है जबकि आत्मसम्मान मूल्यांकन और स्वच्छंद है। आत्म-धारणा एक आत्म-स्कीमा का बना हुआ है, और आत्म-सम्मान, आत्म-ज्ञान, और पूरे के रूप में स्वयं के लिए फार्म का सामाजिक स्वयं के साथ सूचना का आदान-प्रदान किया जाता है। यह अतीत, वर्तमान और भविष्य खुद व्यक्तियों वे बनना चाहते हैं, क्या वे बन सकता है की विचारों, या क्या वे बनने से डर रहे हैं प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ भविष्य खुद भी शामिल हैं, संभव खुद कुछ व्यवहार के लिए प्रोत्साहन के रूप में कार्य कर सकते हैं।

Page No.
Date :

"लौकिक आत्म मूल्यांकन सिद्धांत लोगों को अपनी नकारात्मक आत्म से खुद को दूर करने और उनके सकारात्मक एक के लिए और अधिक ध्यान देकर एक सकारात्मक आत्म-मूल्यांकन बनाए रखने के लिए एक प्रवृति कार्तिक है। इसके अलावा, लोगों को स्व-अनुभव करने के लिए एक प्रवृति है।

मनोवैज्ञानिक कार्ल रोजर्स और इब्राहीम मास्लो स्वयं अवधारणा की धारणा स्थापित करने के लिए जाने जाते हैं। रोजर्स के मुताबिक हर कोई 'आदर्श स्व' तक पहुंचने के लिए प्रयासरत करते हैं। रोजर्स भी मानसिक रूप से स्वस्थ लोगों को सक्रिय रूप से दूसरों की अपेक्षाओं के द्वारा बनाई गई भूमिकाओं से दूर ले जाते हैं, और इसके बजाय सत्यापन के लिए स्वयं के भीतर धारणा करती हैं वे वैध के रूप में अपने स्वयं के अनुभवों को स्वीकार करने से डर रहे हैं, ताकि वे खुद को बचाने के लिए या दूसरों से अनुमोदन जीतने के लिए या तो उन्हें बिगाड़ने के लिए प्रयास करें।

Page No.
Date :

अभिक्षमता (Aptitude)

Aptitude ऐसी विशेषताओं के समूह का द्योतक है, जो (प्रशिक्षण के उपरांत) किसी विशिष्ट ज्ञान, कौशल या संगठित प्रतिक्रियाओं के समुच्चय को अर्जित करने की व्यक्ति की योग्यता की सूचक होती है, जैसे: भाषा बोलने, संगीतकार बनने, यांत्रिक कार्य करने की योग्यता।"

According to Traxler :- "अभिक्षमता व्यक्ति में विद्यमान कोई ऐसा गुण अथवा गुणों का समुच्चय है जो किसी ज्ञान, कौशल के समूहन की उस सीमा का द्योतक है, जिसे वह व्यक्ति उपयुक्त प्रशिक्षण में प्राप्त करने योग्य हो सकेगा।

अभिक्षमता परीक्षण किशोर छात्रों को अपने विषय अथवा व्यवसाय चयन हेतु मार्गदर्शन देने हेतु उपयोगी है। शैक्षिक तथा व्यवसायिक क्षेत्र में चयन के लिए अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। विभिन्न व्यावसायिक तथा शैक्षिक अध्ययनक्रमों में छात्रों का चयन अभिक्षमता परीक्षण के आधार पर किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date :

अभिक्षमता (Aptitude)

भूमिका :-

अभिक्षमता की प्रकृति

अभिक्षमता से हम व्यक्ति के रुचि योग्यता, ज्ञान के संबंध में जान सकते हैं।

* अभिक्षमता से हम मूर्त या वस्तु नहीं है अपितु यह एक अमूर्त संज्ञा है। जो एक गुण को व्यक्त करती है। जो व्यक्ति के व्यवहार से संबंधित होती है।
* अभिक्षमता व्यक्ति के गुण को व्यक्त करती है।
* अभिक्षमता व्यक्ति के किसी कार्य करने की योग्यता को व्यक्त करती है।
* अभिक्षमता पर योग्यता, रुचि का गहरा प्रभाव पड़ता है।
* अभिक्षमता से व्यक्ति के वर्तमान की योग्यता के आधार पर भविष्यवाणी करती है।

अभिक्षमता का मापन (Measurement of Aptitude)

i) सामान्य अभिक्षमता परीक्षण :-

सामान्य कार्यक्षमता का मापन करने हेतु सामान्य अभिक्षमता परीक्षण का उपयोग किया जाता है। यह परीक्षण व्यक्ति की सामान्य बुद्धि, मानसिक योग्यता को मापन करते है।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date :

ii) **मेहक अभिक्षमता परीक्षण** —

मेहक अभिक्षमता परीक्षण इसमें श्रृंखला प्रकार के परीक्षण होते हैं या अनेक परीक्षण का समूह या श्रृंखला होती है। अथवा इस प्रकार के परीक्षणों में अनेक उपपरीक्षण होते हैं जो विभिन्न परीक्षण या उपपरीक्षण व्यक्ति के भिन्न क्षेत्रों की आभिक्षमताओं को इंगित करता है।

iii) **विशिष्ट परीक्षण** :—

Special Aptitude-

इस प्रकार के अभिक्षमता परीक्षण वे परीक्षण हैं जो किसी विशिष्ट क्षेत्र में अभिक्षमता का मापन करने के लिए संगीत अभिक्षमता परीक्षण चिकित्सीय अभिक्षमता का परीक्षणों का उपयोग किया जाता है।

* Pre. Engineering Ability test
* Medical College Admission test

iv) **अभिक्षमता - शिक्षा में उपयोग** →

अभिक्षमता परीक्षण का क्षेत्र वृहद है, निर्देशन तथा परामर्श सेवा में इसका उपयोग बहुतायात से होता है, अभिक्षमता परीक्षण द्वारा छात्र भविष्य में किस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। इसका अनुमान परीक्षण द्वारा संभव होता है।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date :

Attitude (अभिवृत्ति)

Cognitive, Affective, behavioural
Continuous Process.

अभिवृत्ति की प्रकृति :—

अभिवृत्ति के निर्माण में व्यक्ति के व्यवहार के प्रत्यक्षात्मक संवेगात्मक, प्रेरणात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष निहित रहते हैं

अभिवृत्ति धनात्मक अथवा ऋणात्मक भी हो सकती है अभिवृत्ति परिस्थिति, योजना, व्यक्ति, वस्तु से संबंधित होती है।
उभिवृत्तियों में समय-2 पर परिवर्तन हो सकता है।
उभिवृत्तियों के विकास पर प्रत्यक्षीकरण तथा संवेगात्मक कारकों पर प्रभाव डालते हैं।
अभिवृत्ति व्यक्तिगत होती है किसी एक घटना अथवा वस्तु के प्रति अलग-अलग व्यक्तियों की अभिवृत्ति में अंतर होता है।

अभिवृत्ति व्यक्ति के आधार पर व्यवहार को प्रभावित करती है, धनात्मक अभिवृत्ति व्यक्ति को सफलता दिलाती है।
अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से संबंध रखती है।

Scanned with CamScanner

* अभिवृत्ति के निर्धारण में स्व का अधिक महत्व होता है।
* अभिवृत्ति संस्कृति पर निर्भर करता है,
* अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार का आधार होती है।

Defination of Attitude :-

अभिवृत्ति अपने मनोभावों तथा विश्वासों को इंगित करती है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति क्या सोच रहा है। अथवा उसका पूर्व विश्वास क्या है।

According to Thurstone → अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से संबंधित धनात्मक अथवा ऋणात्मक भाव है"

According to C.V Good → अभिवृत्ति किसी भी, व्यक्ति या वस्तु के प्रति किसी विशेष ढंग से, किसी विशेष सघनता से प्रतिक्रिया करने की तत्परता है।

According to F.S freeman (फ्रीमैन) अभिवृत्ति किन्हीं परिस्थितियों, व्यक्तियों में या वस्तुओं के प्रति संगत ढंग से प्रतिक्रिया करने के स्वभाविक तत्परता है।

Scanned with CamScanner

जिसे सीख लिया गया है। तथा जो व्यक्ति के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग से बन गया है।

अभिवृति मापन

अभिवृति की प्रकृति आंतरिक होती हैं। विगत साठ वर्षों में अभिवृति मापन के क्षेत्र में काफी विकास हुआ है। तथा आधुनिक समय में विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों, परिस्थितियों आदि के प्रति अभिवृति का मापन करने के लिए अनेक प्रकार के अभिवृति मापन उपकरण उपलब्ध है। अभिवृति मापन तीन मुख्य विधियाँ है।

i) प्रत्यक्ष प्रश्न विधि
ii) प्रत्यक्ष अवलोकन विधि
iii) रेकलित मापनी विधि

i) प्रत्यक्ष प्रश्न विधि →
   i) अनुकूल अभिवृति
   ii) प्रतिकूल अभिवृति
   iii) अनिश्चित अवस्था।

ii) प्रत्यक्ष अवलोकन विधि → इस विधि में व्यक्ति की वास्तविक अभिवृति का पता चलता है क्योंकि व्यक्ति को यह आभास नहीं होता है कि उसका अवलोकन किया जा रहा है।
Exa - कोई व्यक्ति जब दहेज लेता है।

Date :

iii) परिमापन विधियाँ → i) कथन विधियाँ
ii) प्रतिक्रिया विधियाँ

अभिवृत्ति शिक्षा में उपयोग →

अभिवृत्ति व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए आवश्यक है, किसी भी वस्तु के प्रति बनी हुई धारणाओं, विश्वासों, आदर्शों और अभिप्रेरणाओं का संबंध अभिवृत्ति से होता है। कोई भी व्यक्ति किसी अभिवृत्ति के प्रभाव में आकार एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करता है। अभिवृत्तियों के द्वारा किसी वस्तु विचार के प्रति एक विशेष प्रकार की रूचि-अरुचि, पसंद-नापसंद पनप जाती है। जिसकी बुनियाद कुछ हद तक तार्किक हो सकती है,

अभिवृत्ति ऐसी प्रवृत्ति या शारीरिक-मानसिक अवस्था है। जो व्यक्ति को एक परिस्थिति में एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने हेतु प्रेरित करती है, शिक्षा में इसका उपयोग करके छात्रों के व्यवहार को उचित दिशा प्रदान कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

Skills & Competencies

अनुकूली तथा सकारात्मक व्यवहार की वे योग्यताएँ हैं जो व्यक्तियों को दैनिक जीवन की माँगों और चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए सक्षम बनाती हैं। ये जीवन कौशल सीखे जा सकते हैं तथा इनमें सुधार भी किया जा सकता है। किसी भी कार्य को सम्पन्न करने के लिए हमें बहुत-सी क्रियाएँ करनी होती हैं। प्रत्येक क्रिया को करने का अपना एक सर्वोत्तम तरीका है, इस सर्वोत्तम तरीके को कौशल (Skill) कहा जाता है।

According to N.L. Gage - "तकनीकी कौशल उसके विशिष्ट अनुदेशात्मक तकनीक या प्रक्रियाएँ हैं, जिन्हें अध्यापक कक्षा-कक्ष में उपयोग में लेता है। ये शिक्षण या खेल (Ludoo, chess, etc) की विभिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित होती है या जो शिक्षक के निरन्तर प्रयोग में आती है।"

According to B.K. Passi :- "कौशल, अध्यापन कार्य या व्यवहार का ऐसा समूह है जिनका उद्देश्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों के अधिगम में सहायता पहुँचाता है।

* कौशल व्यवहार से सम्बन्धित होते हैं, और अधिगम में सहायता पहुँचाते हैं।

Scanned with CamScanner

Date :

* कौशल कक्षा-कक्ष की अन्तःक्रिया को भी प्रभावित करते हैं।

* कौशल उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होते हैं।

Scanned with CamScanner

दक्षता का सामान्य अर्थ यह है कि किसी कार्य या उद्देश्य को पूरा करने में लगाया गया समय या श्रम या ऊर्जा कितनी उचित्त तरह काम में आती है। "दक्षता का विभिन्न क्षेत्रों एवं विषयों में होता है। विषयवस्तु के बजाय उस विषय की दक्षता और क्षमता के विकास की बात पर ज्यादा जोर दिया गया है।

आधुनिक काल में शिक्षा को उद्यमगत दक्षता के रूप में स्वीकार किया गया है। किसी भी उद्यम के लिए कुछ दक्षताओं का होना आवश्यक है। N.C.T.E द्वारा अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में इस आजीविकार्थ अध्यापकीय तैयारी को व्यावहारिक माना जाता है। विद्यालय में छात्रों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अधिगम की समस्या भी जटिल होती जा रही है। अतः अध्यापकीय कुशलता एवं दक्षता की वृद्धि आवश्यक है। विषयवस्तु के अलावा उस विषय की दक्षता और क्षमता के विकास की बात पर ज्यादा जोर देते हैं। परन्तु अब इन दोनों के अंतर को समझने का प्रयास करते हैं, तो कोई साफ-साफ अंतर दिखाई नहीं देता है और हर जगह यही सुनने को मिलता है कि

Page No.
Date :

हम उनका विकास कर रहे हैं।

Ex :- 5 K.m दौड़ना, 50 K.g वजन उठाना दिनभर भाषण आदि। जहाँ तक मेरा मानना है हर इंसान विशेष आवश्यकता वालों को छोड़कर इन गुणों को लेकर पैदा होता है। और इनमें समय और अनुभव के साथ सुधार होता रहता है, तो फिर दक्षता किसे कहेंगे, दक्षता के मानदंड में मानसिक गुणों को शामिल किया जाता है, जिसमें यह माना जाता है कि वह दौड़ने में दक्ष है, कुश्ती लड़ने में दक्ष है,

अब अगर हम इसको शिक्षा के उद्देश्य से जोड़कर देखें तो समझा जाता है हमारा काम क्षमता के विकास के बजाय दक्षता के विकास पर ज्यादा होना चाहिए क्योंकि सभी बच्चे एक जैसी क्षमता लेकर पैदा होते हैं, हमें बस बच्चे रुचि की क्षमता की पहचान करने और उसके विकास में मदद करने का काम करना चाहिए।

Characteristics for Competencies

शिक्षक विद्यार्थियों में प्रिय हो।

* शिक्षक आदर्शवादी हो, व्यवहार में, रहन-सहन में, नैतिकता में, चरित्र में, व्यक्तिगत जीवन में समस्त गुणों से सम्पन्न हो, समयबद्धता एवं सम्प्रेषण में सक्षम हो।
* समुदाय में सम्मानित व्यक्ति हो।
* व्यवहार में मधुरता हो

Date :

आत्मविश्वासी एवं सबकी सहायता करने वाला है।
* शिक्षक, शिक्षा एवं तकनीकी की नई नीतियों
* को ग्रहण करने वाला हो।
संसाधनों का समुचित उपयोग करने वाला है।
* ज्ञान-सम्प्रेषण में दक्ष हो।
* शिक्षक को अपने विषय में पूर्ण अधिकार हो।
* वाक्‌चातुर्य, नेतृत्व, सहयोगी, मितभाषी, न्याय
* समानता एवं भाईचारे के गुणों से अभिभूत हो।

Exe
N.C.T.E द्वारा दी गयी दक्षताएँ

i) विषय-वस्तु सम्बन्धी दक्षताएँ
ii) अभिभावक कार्य सम्बन्धी दक्षताएँ
iii) सम्प्रेषण सम्बन्धी दक्षताएँ
iv) अन्य शैक्षिक क्रियात्मक दक्षताएँ
v) समुदाय तथा अन्य अभिकरण सम्बन्धी दक्षताएँ
vi) मूल्यांकन दक्षताएँ
vii) शिक्षण अधिगम निर्माण में दक्षताएँ
viii) संकल्पना दक्षताएँ
ix) सन्दर्भ दक्षताएँ
x) प्रबन्ध सम्बन्धी दक्षताएँ

Scanned with CamScanner

Page No.
Date :

Interest (रुचि)

रुचि या शौक वैसी क्रियाएँ होती हैं जो आनंद के लिये अवकाश (फुर्सत) के समय की जाएँ। इनमें खेल, मनोरंजन, कला संगीत, किसी विषय का अध्ययन या उससे सम्बन्धित चीजें इकट्ठी करना, इत्यादि शामिल हैं। यह क्रियाएँ व्यवसायिक रूप से या पैसे कमाने की चाह से नहीं करी जाती बल्कि केवल व्यक्तिगत दिलचस्पी के आधार पर इनपर समय खर्च करा जाता है। रुचि वह प्रेरक शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया के प्रति ध्यान देने के लिए प्रेरित करता है।

रुचि की परिभाषा एवं अर्थ

According to Bigham :- "रुचि किसी अनुभव में सम्मिलित होने व इसमें संलग्न रहने की प्रवृत्ति है, जबकि विरक्ति उससे दूर जाने की प्रवृत्ति है।

According to Gilford :- रुचि किसी क्रिया वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने उसके द्वारा आकर्षित होना, उसे पसंद करने तथा उसे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति है।"

Scanned with CamScanner

According to Remmers, Rummell & Gage -

रुचियाँ वास्तव में सुखांत व दुखांत भावनाओं, पसंद या नापसंद के व्यवहार के प्रति आकर्षण व विकर्षण से परीलक्षित होती हैं।

ऊपर के परिभाषाओं से कहा जा सकता है कि किसी वस्तु व्यक्ति प्रक्रिया तथ्य कार्य आदि को पसंद करने तथा उसके द्वारा आकर्षित होने पर उस पर ध्यान केंद्रित करने तथा उससे संतुष्टि पाने की प्रकृति को ही रुचि कहते हैं। रुचि का व्यक्ति की योग्यताओं से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता है।

Nature of Interest :-

* रुचियाँ व्यक्ति की पसंद को इंगित करती हैं।
* रुचि अभिक्षमता का व्यावहारिक रूप होता है।
* रुचियाँ जन्मजात भी होती हैं और अर्जित भी हो सकती हैं।
* रुचि तथा ध्यान में गहरा संबंध होता है जिस वस्तु या विषय में हमें रुचि होती है, हम उसे ध्यान देते हैं।
* रुचि का संबंध आवश्यकता, इच्छा तथा लक्ष्यों से होता है।

Page No.
Date :

* रुचियाँ परिवर्तनशील होती है, परिपक्वता, शिक्षा तथा अन्य आन्तरिक तथा बाह्य कारणों से होती हैं, या बदलती हैं।

* रुचि से सीखने में आनेवाली असामान्य रुकावटों को दूर करने में सहायता मिलती है, इससे व्यक्ति को थकावट का सामना करना और असफलता से बचने में सहायता मिलती है।

* रुचि अभिप्रेरित करने का कार्य करती है ज्यों व्यक्ति की ज्ञानात्मक, क्रियात्मक या भावनात्मक व्यवहार की ओर अग्रसर करती है।

* रुचि किसी भी वस्तु को व्यक्तिगत अर्थ प्रदान करती है। किसी भी वस्तु में रुचि होने के कारण हम सभी वस्तुओं को उसी रुचि के दृष्टिकोण से व्याख्या करते हैं।

Measurement of Interest

(a) प्रश्नावली → प्रश्नावली में प्रश्न लिखित अथवा मुद्रित रूप में होते हैं, प्रश्नावली एक साथ अनेक अथवा मुद्रित रूप में होते हैं, इसमें लिखकर या चिन्ह लगाकर अपने उत्तर देने होते हैं। प्रश्नावली की सहायता से हम शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में रुचियों का मापन सरलता से कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

(iii) अवलोकन :- जब रुचियों को अनौपचारिक ढंग से ज्ञात करना हो तब अवलोकन का उपयोग अत्यंत सुविधाजनक ढंग से किया जाता है। जैसे- किसी शिक्षक को अपने छात्रों की रुचियाँ अवलोकन द्वारा ज्ञात करते हैं। अथवा माता-पिता अपने बच्चों की रुचियाँ अवलोकन द्वारा ज्ञात कर सकते हैं परन्तु अवलोकन से प्रदर्शित रुचियों का ही ज्ञान हो पाता है।

(iv) साक्षात्कार - साक्षात्कार में सीधे-सीधे प्रश्न पूछकर व्यक्ति की रुचियों को जाना जाता है। इस विधि में व्यक्ति अपनी रुचियों के संबंध में खुद बताता है। शैक्षिक तथा व्यावसायिक परामर्शदाता रोजगार तथा प्रत्येक के लिए साक्षात्कार विधि का उपयोग करते हैं। साक्षात्कार द्वारा प्रदर्शित रुचियों की जानकारी मिल जाती है।

रुचि परीक्षणों का शिक्षा में उपयोग :→

रुचि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण विमा है। किसी कार्य में रुचि होने पर व्यक्ति उस कार्य को सरलता व शीघ्रता से साथ तथा मनोयोग से करता है। एवं उसमें असफलता प्राप्त कर लेता है। इसके विपरीत रुचि के अभाव में व्यक्ति कार्य को ठीक ढंग से मन लगाकर

Scanned with CamScanner

नहीं कर पाता है। परिणामतः प्रायः उस कार्य में असफल हो जाता है। इसलिए शैक्षिक तथा व्यवसायिक परामर्श प्रदान करने हेतु रुचियों का ध्यान रखा जाता है। शिक्षा तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में रुचियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। शिक्षाशास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक उचित शैक्षिक व व्यवसायिक मार्गदर्शन करने के लिए रुचियों का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन परामर्श में रुचियों के ज्ञान व महत्व को स्वीकार करने के लिए फलस्वरूप रुचि मापन पर बल दिया जाने लगा है। तथा उनके रुचि सूचियाँ बनायी गयी।

Page No.
Date :

Personality (व्यक्तित्व)

लैटिन भाषा — पर्सनेअर

ध्वनि करने के सदृश

Origin of Personality Word

समय बीतने के साथ ही Persona शब्द का अर्थ परिवर्तित होता चला गया। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में रोम के प्रसिद्ध लेखक और कूटनीतिज्ञ सिसरो ने उसका प्रयोग चार अर्थों में किया—

i) जैसा कि एक व्यक्ति दूसरे को दिखाई देता है पर वैसा वह वास्तव में है नहीं,

2) वह कार्य जो जीवन में कोई करता है, जैसे कि दार्शनिक;

3) व्यक्तिगत गुणों का संकलन, जो एक मनुष्य को उसके कार्य के योग्य बनाता है,

4) विशेषता और सम्मान, जैसा कि लेखन शैली में होता है;

इस प्रकार तेरहवीं शताब्दी तक 'Persona' शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में होता रहा। चौदहवीं शताब्दी में मनुष्य की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करने के लिए एक नये शब्द की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा। इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए Persona को Personality शब्द में रूपान्तरित कर दिया गया।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date :

Meaning of Personality

"व्यक्तित्व शब्द में एक मनुष्य के न केवल शारीरिक और मानसिक गुणों का, वरन् उसके सामाजिक गुणों का भी समावेश होता है। पर इतना कहने से भी व्यक्तित्व का अर्थ पूर्ण नहीं होता है। कारण यह है कि यह तभी संभव है, जब एक समाज के सब सदस्यों के विचार, संवेगों के अनुभव और सामाजिक क्रियायें एक-सी हों। ऐसी दशा में व्यक्तित्व का प्रश्न ही नहीं रह जाता है। इसीलिये मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि व्यक्तित्व - मानव के गुणों, लक्षणों, क्षमताओं विशेषताओं आदि की संगठित इकाई है। जैसा कि मन ने लिखा है - "व्यक्तित्व की परिभाषा, व्यक्ति के ढाँचे व्यवहार की विधियों, रुचियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं और कुशलताओं के सबसे विशिष्ट एकीकरण के रूप में की जा सकती है।

i) According to Drever :- "व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग, व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिये किया जाता है जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है।

Date :

According to Warren :→ "व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।

Factors of Influencing Personality

i) शारीरिक रचना का प्रभाव :→ शारीरिक रचना के अन्तर्गत शरीर के अंगों का पारस्परिक अनुपात, शरीर की लम्बाई और भार, नेत्रों और बालों का रंग, मुखाकृति आदि आते हैं। ये सभी किसी न किसी रूप से व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार उस बालक अथवा बालिका में संवेगात्मक असंतुलन के कारण एक अलग व्यक्तित्व का विकास हो जाता है। जबकि साधारण रूप में उसके व्यक्तित्व का विकास इससे प्रकार से होता है। इसप्रकार शारीरिक संरचना का स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ता है।

ii) मानसिक घातक कारक :→ व्यक्ति में जितनी अधिक मानसिक योग्यता होती है, उतना ही अधिक वह अपने व्यवहार समाज के आदर्शों और प्रतिमानों के अनुकूल बनाने में सफल होता है। परिणामतः व्यक्ति का उतना ही अधिक विकास होता है।

Scanned with CamScanner

According to Warren :→ व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।

Factors of Influencing Personality

शारीरिक रचना का प्रभाव :→

i) शारीरिक रचना के अन्तर्गत शरीर के अंगों का पारस्परिक अनुपात, शरीर की लम्बाई और भार, नेत्रों और बालों का रंग, मुखाकृति आदि आते हैं। ये सभी किसी न किसी रूप में व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार उस बालक अथवा बालिका में संवेगात्मक असंतुलन के कारण एक अलग व्यक्तित्व का विकास हो जाता है। जबकि साधारण रूप में उसके व्यक्तित्व का विकास इसी प्रकार से होता है। इस प्रकार शारीरिक संरचना का स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ता है।

ii) मानसिक घातक कारक :→ व्यक्ति में जितनी अधिक मानसिक योग्यता होती है, उतना ही अधिक वह अपने व्यवहार समाज के आदर्शों और प्रतिमानों के अनुकूल बनाने में सफल होता है। परिणामतः व्यक्ति का उतना ही अधिक विकास होता है।

Scanned with CamScanner

According to Prince :- "व्यक्तित्व समस्त जन्मजात संस्कारों, आवेगों, प्रवृत्तियों, झुकावों एवं मूल प्रवृत्तियों और अनुभव अर्जित संस्कारों एवं प्रवृत्तियों का योग है।"

iii) संवेगात्मक कारक → ये बालक का संवेगात्मक व्यवहार उसके विकास के अन्य पहलुओं के अनुरूप होता है, और उनसे उसका अन्तः सम्बन्ध होता है।

According to Spirtz :- "संवेग जन्म से ही विद्यमान नहीं रहते हैं। मानव - व्यक्तित्व के किसी भी अंग के समान इनका विकास होता है।

iv) वातावरण एवं व्यक्तित्व विकास :-

वातावरण सम्बन्धी तत्व भी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं। व्यक्ति के विकास में पर्यावरण, जिसमें व्यक्ति रहता है। और वह अनुभव जो इसके सम्पर्क के कारण उत्पन्न होते हैं, अपना अमिट तथा स्पष्ट प्रभाव डालते हैं।

i) भौतिक वातावरण का प्रभाव -
ii) सामाजिक वातावरण का प्रभाव -
   (a) माता-पिता का प्रभाव
   (b) पारिवारिक सम्बन्ध -
   (c) पड़ोस का प्रभाव -
   (d) आर्थिक स्थिति
   (e) सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव etc.

Scanned with CamScanner

Value (मूल्य)

मूल्य का अर्थ नैतिक विचारों, सामान्य अवधारणाओं या दुनिया के प्रति झुकाव या कभी-2 केवल रुचियों, दृष्टिकोण, वरीयताओं, आवश्यकताओं, भावनाओं और प्रस्तावों के लिए किया जाता है।

लेकिन समाजशास्त्री इस शब्द का अधिक सटीक अर्थों में उपयोग करते हैं "जिसका अर्थ है" सामान्यीकृत अंत जिसमें शुद्धता, अच्छाई या निहित वांछनीयता का अर्थ है"। मूल्य मूल आशंपों का प्रतिनिधित्व करता है कि अस्तित्व की एक विशिष्ट विधा आचरण या अंतः स्थिति है या आचरण के अंत या अंत-अवस्था के विपरीत व्यक्तिगत या सामाजिक रूप से बेहतर है।

"संगठनात्मक व्यवहार में परिभाषित मूल्यों को एक संस्कृति में अच्छा, वांछनीय और उचित या बुरा अवांछनीय और अनुचित माना जाता है, को सामूहिक अवधारणाओं के रूप में परिभाषित किया गया है।

कुछ सामान्य व्यावसायिक मूल्य जिम्मेदारी, नवाचार और सामुदायिक भागीदारी है।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date :

एम हरलाम्बोस के अनुसार :→ "एक मूल्य एक विश्वास है कि कुछ अच्छा और वांछनीय है।

आर०के० मुखर्जी के अनुसार :→ "मूल्यों को सामाजिक रूप से अनुमोदित इच्छाएँ और लक्ष्य हैं जो कंडीशनिंग, सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से आंतरिक होते हैं। और जो व्यक्तिपरक प्राथमिकताएँ, मानक और आकांक्षाएं बन जाते हैं।

TW हिग्घी के अनुसार - मूल्य सचेत या अचेतन प्रक्रिया / प्रेरक है और कार्रवाई और निर्णय के औचित्य है।

मूल्यों के परिचित उदाहरण हैं। धन, निष्ठा, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुत्व और मित्रता। ये सामान्यीकृत सिरों को सचेत रूप से आगे बढ़ाया जाता है। या व्यक्तियों में आयोजित किया जाता है जैसा कि उनमें सार्थक है।

Characteristics of Value

मूल्य के लक्षण :

प्रत्येक व्यक्ति के लिए मूल्य अलग-अलग हैं।
* कोई व्यक्ति क्या मूल्य ले सकता है
* और दूसरा, वह जिस डिग्री का मूल्य रखता है।
मान विशिष्ट हो सकते हैं जैसे किसी के
* माता-पिता का सम्मान करना या घर का
मालिक होना या वे अधिक सामान्य हो सकते हैं
जैसे - स्वास्थ्य, प्रेम और लोकतंत्र।
"सत्य की जीत होती है", "अपने पड़ोसी
से अपने समान प्रेम करें", "सीखना
अच्छा है क्योंकि अंत स्वयं ही सामान्य
मूल्यों के कुछ उदाहरण हैं।
व्यक्तिगत उपलब्धि, व्यक्तिगत खुशी, और
* भौतिकवाद मॉडम औद्योगिक समाज के प्रमुख
मूल्य हैं।
इन तरह की अवधारणाएं और मानक
* अपेक्षाकृत कम हैं। और रोजमर्रा की जिंदगी
में सामना किए गए कई वस्तुओं के किसी
व्यक्ति के मूल्यांकन का निर्धारण या मार्गदर्शन
करते हैं।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date :

मूल्यों की विशेषताएँ :-

* ये बेहद व्यावहारिक हैं, और मूल्यांकन के लिए न केवल तकनीकों की आवश्यकता होती है बल्कि सामाजिक संदर्भ की भी समझ होती है।
* ये समता और नैतिकता के मानक प्रदान कर सकते हैं।
* ये विशिष्ट स्थितियों या व्यक्तियों से परे जा सकते हैं।
* ये अपेक्षाकृत स्थायी होते हैं।
* ये किसी व्यक्ति के मूल में अधिक केंद्रित हैं।
* वे लोगों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं, और दूसरों के कार्यों के मूल्यांकन के लिए मापदंड के रूप में कार्य करते हैं।

चूँकि ज्ञान अक्सर दृष्टिकोण और व्यवहार दोनों को दृढ़ता से प्रभावित करते हैं, इसलिए वे कार्यस्थल में कर्मचारी आचरण के लिए एक प्रकार के व्यक्तिगत कम्पास के रूप में कार्य करते हैं।

ये निर्धारित करने में मदद करते हैं कि क्या एक कर्मचारी काम और कार्यस्थल के बारे में भावुक है, जो बदले में ऊपर-औसत रिटर्न, उच्च कर्मचारी संतुष्टि, मजबूत टीम की गतिशीलता और तालमेल का कारण बन सकता है।

मूल्य दो प्रकार के हैं।

i) टर्मिनल मान
ii) वाध्य मान

वे मान जो लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं, वे उन निर्णयों के प्रकारों को प्रभावित करते हैं जो वे करते हैं, वे अपने वातावरण और उनके वास्तविक व्यवहारों को कैसे समझते हैं।

मूल्यों के महत्व

* मूल्य हमारे दैनिक व्यवहार को विनियमित करने के लिए सामान्य सिद्धांत हैं। वे न केवल हमारे व्यवहार को दिशा देते हैं बल्कि स्वयं में आदर्श और उद्देश्य भी हैं।

* वे सामाजिक क्रिया के अंतिम छोर, लक्ष्य या उद्देश्यों की अभिव्यक्ति हैं।

* पारम्परिक समाजशास्त्री दुर्खीम ने विघटनकारी व्यक्तिगत जुनून को नियंत्रित करने में मूल्यों के महत्व पर जोर दिया।

* मूल्य प्रेरणा के स्तर को समझने की नींव हैं।

* यह हमारी धारणा को प्रभावित करता है।

* जैसे-जैसे हम व्यक्ति के रूप में बढ़ते और बदलते हैं, हम जीवन के विभिन्न पहलुओं को महत्व देने लगेंगे।

Scanned with CamScanner